एक भारतीय लोक कथा

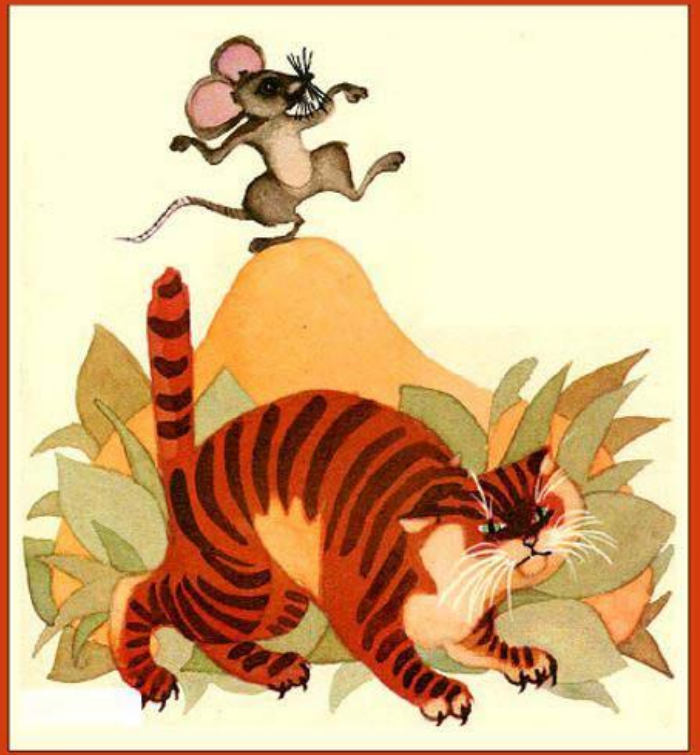

एक छोटा चूहा जो कभी बिल्ली, कुत्ता और बाघ था

चित्र: एन. सुस्तोवा, हिंदी: अरविन्द गुप्ता

लोग कहते हैं कि अगर बाघ के सीने में चूहे का दिल धड़कता हो, तो बेहतर होगा कि वो बिल्लियों से दूर रहे.

एक बार की बात है, एक कौवा अपनी चोंच में एक छोटा चूहा लेकर जंगल में उड़ रहा था.

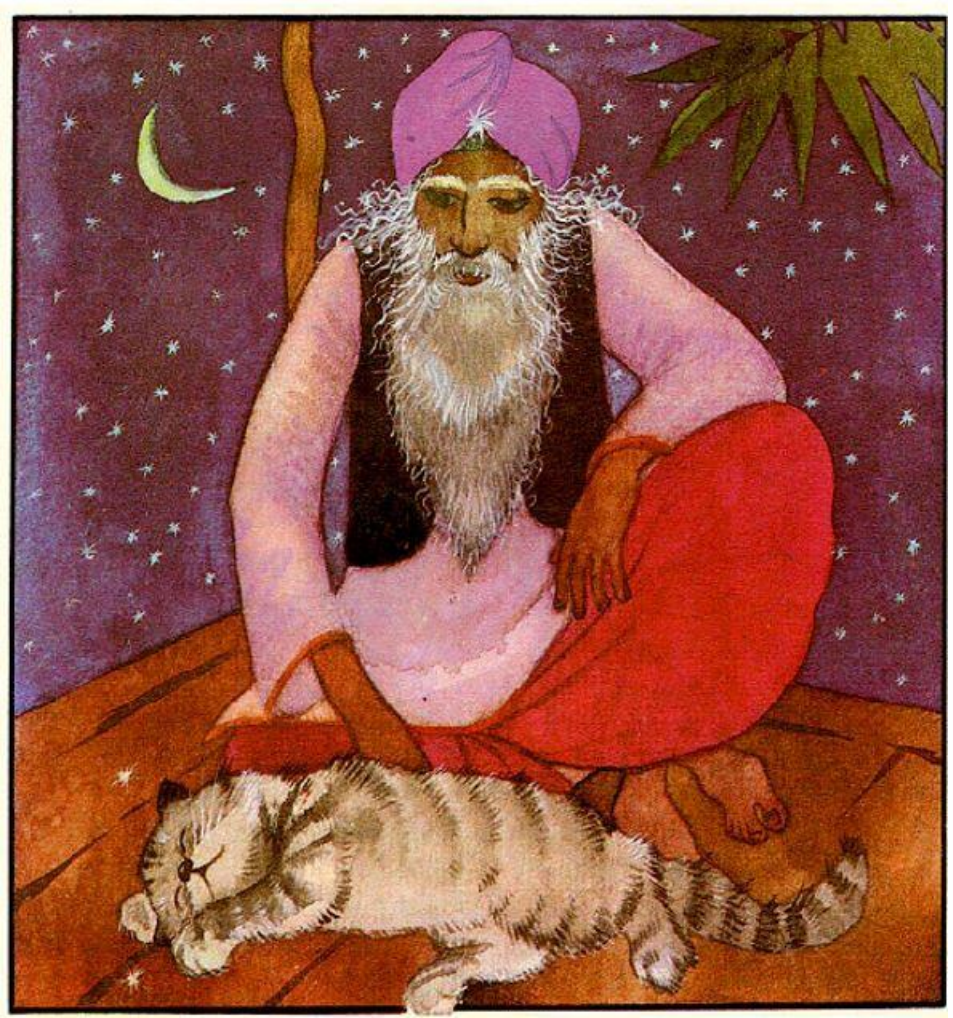

अचानक उसने अपना शिकार गिरा दिया. उस जंगल में एक साधू रहता था जो एक जादूगर था और वो चमत्कार करना जानता था. छोटा चूहा उस साधू के पैरों पर आकर गिरा.

साधू ने छोटे चूहे को देखा, उसे उठाया और अपने साथ घर ले गया. कई दिन बीत गए पर चूहा साधू की झोपड़ी में ही रहा, वो बाहर नहीं निकला. साधू ने उसे खाने-पीने के लिए कुछ दिया जिससे चूहा संतुष्ट था. फिर एक दिन ऐसा आया जब चूहा झोपड़ी से बाहर निकला. पास ही उसने एक बहुत बड़ा बिलौटा देखा. उसे देख छोटा चूहा जितनी तेजी से भाग सकता था वो उतनी तेजी से भागा.

वो डर के मारे कांपते हुए एक कोने में जाकर छिप गया.

साधू ने वो देखा और कहा:

"बताओ क्या मामला है? तुम इस तरह क्यों कांप रहे हो?”

"मेरे आक़ा!" छोटा चूहा चिल्लाया, "हमारी झोपड़ी से कुछ ही दूरी पर मुझे एक बिलौटा मिला, और उसने मुझे इतना डरा दिया कि मैं लगभग मर गया!"

साधू ने कुछ देर सोचा, फिर कहा:

“ठीक है, मैं कुछ ऐसा कर सकता हूं जिससे तुम्हें फिर कभी बिल्लियों से डरने की ज़रुरत नहीं होगी. जाओ, बिस्तर पर जाकर सो जाओ! सुबह जब तुम जागोगे तो तुम चूहा नहीं रहोगे. तुम एक बिल्ली बन जाओगे.”

साधू ने अपना वचन निभाया. सुबह जागने पर नन्हा चूहा एक बिल्ली बन गया था.

“तुम्हें फिर कभी बिल्लियों से डरने की ज़रूरत नहीं होगी! क्योंकि अब तुम खुद एक बिल्ली बन गए हो!” साधू ने कहा.

बिल्ली, जो कभी छोटा चूहा थी उससे बेहद खुश हुई और वो खुशी-खुशी झोपड़ी से बाहर भागी.

वो खुद को गर्म करने के लिए धूप में लेटने ही वाली थी, तभी अचानक उसे फिर से वही बिलौटा दिखाई पड़ा. लेकिन वो तुरंत भूल गई कि वो अब एक बिल्ली थी, और अब एक छोटा चूहा नहीं रही थी.

"अब क्या मामला है?" साधू ने उससे पूछा. "इस बार तुम्हें किसने डराया?"

बिल्ली खुद पर इतनी शर्मिंदा थी कि वो कबूल नहीं कर सकी कि वो अभी भी बिलौटे से डरती थी. इसलिए उसने साधू से झूठ बोला:

“मुझे जंगल में एक कुत्ता मिला. उसने मेरा पीछा किया और यह एक चमत्कार ही है कि मैं ज़िंदा बच निकली!”

साधू ने फिर कहा, “बिस्तर पर जाओ और सो जाओ! सुबह जब तुम जागोगी तो तुम बिल्ली नहीं रहोगे. फिर तुम एक कुत्ता बन जाओगे, और फिर तुम्हें कभी भी कुत्तों से डरने की ज़रूरत नहीं होगी."

और सच में सुबह जब बिल्ली जागी, तो वो एक बड़ा कुत्ता बन गई थी. वह जोर-जोर से भौंकते हुए जंगल में भागी. एक पेड़ के पास उसे फिर से वही बिलौटा दिखाई दिया. बिलौटा ने भी कुत्ते को देखा. बिलौटा को ऐसा लगा जैसे कुत्ता उस पर झपटने वाला था, और फिर वो अपना बचाव करने के लिए तैयार हो गया: उसने एक पंजा उठाया और वो जोर-जोर से म्याऊं-म्याऊं करने लगा. म्याऊं-म्याऊं सुनकर कुत्ता डर गया और वो वापस झोपड़ी में भागा.

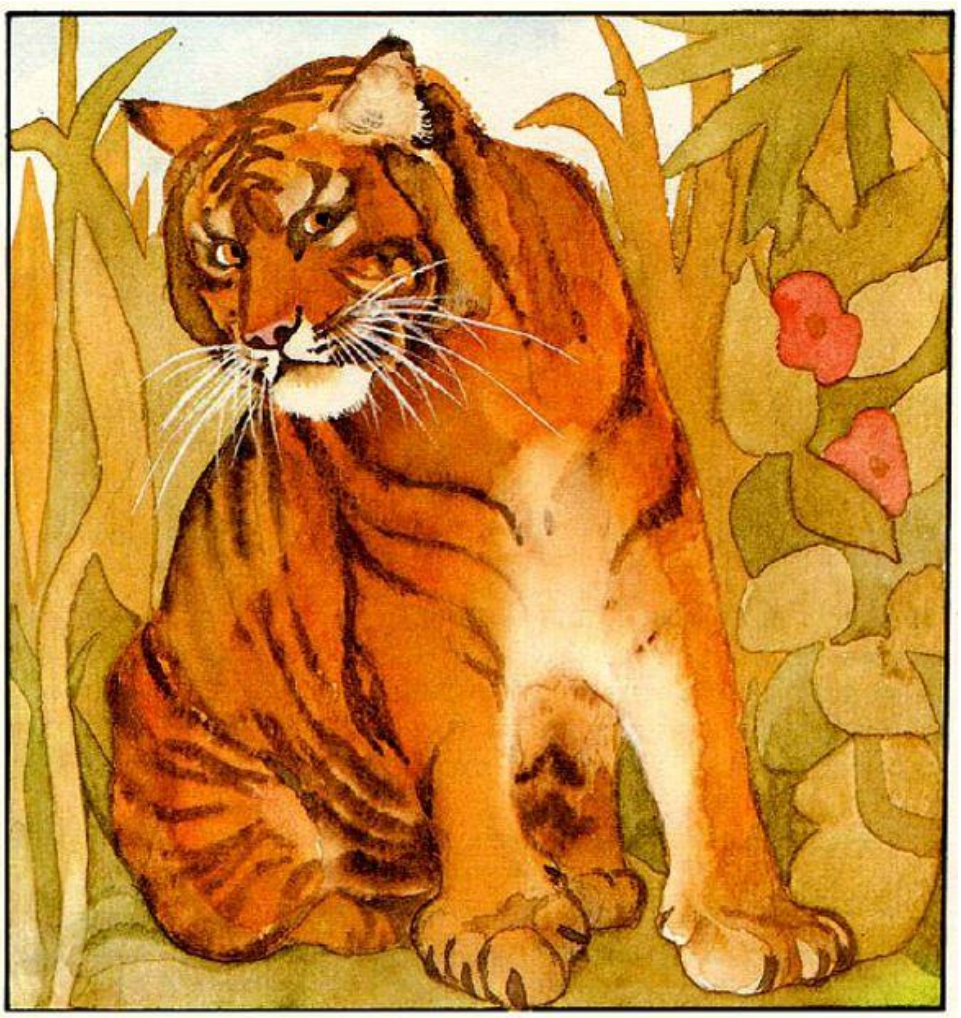

"और इस बार तुम्हें किसने डराया?" साधू ने पूछा.

कुत्ते को खुद पर इतनी शर्म आ रही थी कि वह कबूल नहीं कर सका कि उसी बिलौटे ने उसे डराया था. फिर से कुत्ता साधू से झूठ बोला:

"मेरे आक़ा! हमारी झोपड़ी से कुछ ही दूरी पर मेरी मुलाकात एक बाघ से हुई. मुझे अभी तक यह समझ नहीं आ रहा है कि मैं उसके भयानक पंजों से कैसे बच निकला!"

"तो ठीक है. मैं फिर कुछ ऐसा करूंगा कि तुम्हें फिर कभी किसी से डरना नहीं पड़ेगा. बिस्तर पर जाओ और सो जाओ! कल सुबह जब तुम जागोगे तो तुम बाघ बन जाओगे!"

और फिर वैसा ही हुआ: सुबह जब कुत्ता जागा तो वो एक बाघ बन चुका था.

"यह झोपड़ी मेरे लिए सही नहीं है," उसने सोचा, "अब मैं जानवरों के राजा हूं. फिर मैं एक साधू की इतनी गरीब झोपड़ी में क्यों रहूं? मैं जंगल में जाऊंगा और वहां सभी जानवर मुझे देखकर कांप उठेंगे!"

इस विचार को ध्यान में रखते हुए, बड़े अभिमान के साथ, बाघ जंगल में गया.

अचानक उसकी नजर बिलौटे पर पड़ी! उस बिलौटे ने भी बाघ को देखा. मौत के भय से डरे हुए, बिलौटे के बाल खड़े हो गए, उसकी पीठ झुक गई, उसकी आँखें चमक उठीं!

"यह मेरा अंत है!" बिलौटे ने सोचा. "बाघ से कोई नहीं बच सकता है!"

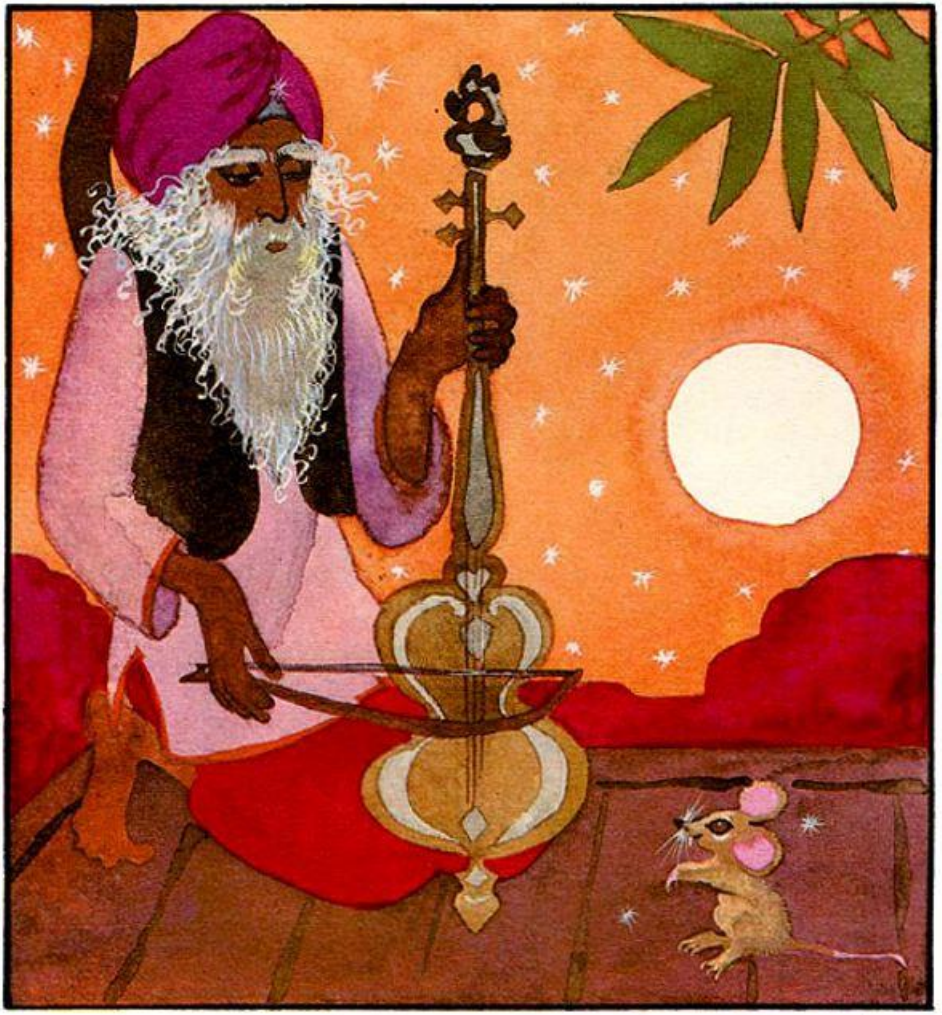

लेकिन उस समय भी बाघ की छाती में एक छोटे से चूहे का दिल धड़क रहा था. जब उसने बिलौटे को देखा तो वो फिर से पागलों की तरह वापस साधू की झोपड़ी की ओर दौड़ा.

वो भागता हुआ झोंपड़ी में घुसा. वो सबसे अंधेरे कोने में छिप गया और डर के मारे अपने दांत किटकिटाता हुआ वहीं लेट गया.

साधू बहुत हैरान हुआ. “तुम फिर इस तरह क्यों कांप रहे हो? क्या हमारे जंगल में बाघ से भी अधिक शक्तिशाली कोई जानवर है?”

"वहां है..." बाघ ने अपनी मरियल आवाज़ में कहा.

"लेकिन वो कौन है?" साधू जानना चाहता था.

"वो वही बिलौटा है!"

अब साधू को सब कुछ स्पष्ट हो गया. फिर उसने कहा:

“एक बाघ जिसकी छाती में एक छोटे चूहे का दिल धड़क रहा हो वो बिल्ली से भी कमज़ोर होता है. इसलिए, जिसकी छाती में चूहे का दिल धड़केगा, वो हमेशा चूहा ही रहेगा.

इन शब्दों के साथ साधू ने बाघ को, वापस एक छोटे चूहे में बदल दिया.